प्रेरितों की किताब
शान्त समय
जनवरी 2018

INDIAN CHURCH OF CHRIST

परिचय

आज हम प्रेरितों की किताब पढ़ने की शुरूआत कर रहे हैं। प्ररितों अधिकतर बाहरी पहुँच की बात करता है। फिर भी इस पुस्तक में बाहरी पहुँच से पहले भीतरी पहुँच और ऊपरी पहुँच की जो बात लिखी है इसके बिना बाहरी पहुँच कोई मायने नहीं रखता।

ऊपरी पहुँच, भीतरी पहुँच, बाहरी पहुँच; ये सब विश्वास के निर्णायक तत्व का वर्णन करते हैं। यह एक कलीसिया या एक व्यक्ति के व्यक्तिगत मसीही जीवन के लिये एक मूलभूत लक्ष्य देते हैं।

ऊपरी पहुँच: परमेश्वर के साथ मेरा रिश्ता:

वह मेरा सृष्टिकर्ता, मेरा पिता, मेरा मूल, मेरी प्रेरणा और मेरा बल है। वह मेरे जीवन का आरम्भ है और मेरे जीवन का एकमात्र कारण। अगले दो रिश्तों में यह अपने आप दिखना चाहिये वर्ना यह झूठ है।

भीतरी पहुँच: दूसरे विश्वासियों के साथ मेरा रिश्ता:

कभी-कभी हम भीतरी पहुँच को "संगती" या "कलीसिया" कहते हैं। हमारे विश्वास में अकेले रहने के लिये हमें नहीं बनाया गया है। जैसे परमेश्वर अनेक स्त्री और पुरूषों, जवान और बूढ़ों, अविवाहि और विवाहितों के जीवनों का उपयोग करते हैं इसीलिये भीतरी पहुँच पालन पोषण, एक दूसरे के साथ बांटने और शिक्षण का एक आवश्यक स्थान बन जाता है। और एक दूसरे के साथ जुड़कर हमारा विश्वास जो ऊपरी पहुँच के साथ शुरू होता है; भीतरी पहुँच से एक दूसरे से जड़े रहने के कारण; जैसे परमेश्वर बाहरी पहुँच के लिये हमें तैयार करते हैं, और भी गहरा और परिपक्व बनता जाता है।

बाहरी पहुँच: अन्य लोगों से मेरा रिश्ता

यह इस बात का वर्णन करता है कि, हमने कहाँ से आरंभ किया - बाहर से। परमेश्वर ने हमें बाहर पाया और विश्वास के द्वार के भीतर हमें लाया। और अब जबकि हम भीतर हैं, बाहरी पहुँच परमेश्वर के साथ हम जिस काम के लिये जुड़े हैं उसका वर्णन करता है। अब, परमेश्वर हमारे द्वारा बाहर पहुँचते हैं, उन लोगों को बचाने के लिये जो विश्वास में नही हैं।

ऊपरी पहुँच....भीतरी पहुँच....बाहरी पहुँच मिलकर विश्वास को बनाते हैं।

1 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 1 पढ़ो

वचन 4-7: "प्रतीक्षा" इस बात पर ध्यान दो। परमेश्वर को अपने समय के अनुसार कार्य करने देने के प्रति हम कितने धीरजवन्त हैं? बिना यह जाने कि कितना समय या कितने दिन लगने वाले हैं, उन्हें सिर्फ प्रतीक्षा करनी थी। हम कितनी प्रतीक्षा करना चाहते हैं? क्या हम परमेश्वर के साथ धिरज दिखाते हैं? या फिर जिस बात के लिये परमेश्वर तैयार नहीं हैं उन्हें हम जबरदस्ती करना चाहते हैं।

परमेश्वर की प्रतीक्षा करने के लिये किस प्रकार के मन की आवश्यक्ता है?

क्या आप और हम सच में यह विश्वास करते हैं कि सब परमेश्वर के नियंत्रण में है?(भ.सं.130:5-6 के तुलना करो)

यहां इन वचनों में प्रेरितों और कलीसिया के लिये परमेश्वर की योजना/धर्मसेवा हमें दिखाई देती है। यरूशलेम से संसार के छोर तक।

आपके जीवन के लिये परमेश्वर की विशेष योजना क्या है? आज के दिन के लिये, कल के लिये, अगले सप्ताह के लिये, अगले वर्ष के लिये वह योजना क्या होगी? पवित्र आत्मा आपमें किस तरह काम करना चाहता है?

आपके आत्मिक वरदान क्या हैं? परमेश्वर के लिये उनका उपयोग आप कैसे कर रहे हैं?

क्या आपका मन दीनता से परमेश्वर की कलीसिया में उस विशेष स्थान और कार्य को जानने का प्रयत्न करता है? (रोमियों 12:4)

वचन 10-11: क्या आप यीशु के फिर से आने की बाट जोह रहे हैं? क्या आप अपने पूरे मन से यह कह सकते हो कि, "हे प्रभू यीशु आ"? (प्र.वा. 22:20)

वचन 12-26: प्रेरितों में किन गुणों की आवश्यक्ता है?

क्या आज कोई है जिसमें ये गुण हैं?

इन बारह प्रेरितों का विशेष मकसद और ज़िम्मेदारी क्या थी? (व.22)

आपके और मेरे लिये पुनरूत्थान कितना महत्व रखता है? क्या हम इसके बिना जी सकते हैं?

इस अध्याय में वचन 14 विशेष रूप से **भीतरी पहुँच** के बारे में है **"ये सब शिष्य, अन्य स्त्रियां, तथा..... निरन्तर प्रार्थना में लगे रहने लगे।"**

आपको क्या लगता है उन्होंने ऐसा क्यों किया? आपको क्या लगता है वो किस बात के लिये प्रार्थना कर रहे थे?

आप प्रार्थना में कितने लौलीन हैं?

किस बात के कारण "एक दूसरे के साथ जुड़े रहना" संभव हुआ?

प्रार्थना और कलीसिया और हमारे पारिवारिक गुट के अन्य कार्यों में एक साथ जुड़े रहने को हम कैसे बढ़ा सकते हैं? इस साल इसे ज्यादा से ज्यादा करने का प्रयत्न करें।

प्रार्थना: यीशु के लिये 2018 में लगातार प्रार्थना और दूसरी बातों में एक साथ जुड़े रहने के लिये सूचि और योजना बनाओ।

2 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 2 पढ़ो

भीतरी पहुँच वचन 1: शिष्यों में किस प्रकार की एकता थी?
प्रभू की बाट जोहने और उनकी प्रतिज्ञाओं के प्रति आपका और मेरा मन एक दूसरे से कितना एकजुट है?
वचन 14: जबकि यहां ऐसा प्रतीत होता है कि केवल पतरस यहां प्रचार कर रहा था तो ऐसा क्यों लिखा है कि वह "ग्यारह शिष्यों के साथ खड़े हुए"? यीशु का संदेश देने में आज हम कितने एकजुट हैं? एकजुट होने के लिये किस प्रकार का मन होना चाहिये?
वचन 42-47:
अ. उन्होंने अपने आपको लौलीन रखा
1. प्रेरितों के शिक्षण में (परमेश्वर के वचन)
2. संगती में (एक दूसरे के जीवन में बांटने में)
3. रोटी तोड़ने में (प्रभू भोज)
4. प्रार्थना में

क्या आप और मैं इन **चारों** बातों में **हमेशा** "लौलीन" रहते हैं या कभी-कभार? यदि नहीं तो वो कौनसी बात हमारे मन में है जो हमें ऐसा करने से रोकती है?
क्या अकेला मसीही जीवन या अकेला विश्वास जैसी कोई बात है?
कलीसिया में जो ज़रूरतमन्द थे उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये, उन्होंने अपनी सम्पत्ति और सामान बेचा - वो समय कब था जब आखिरी बार हमने ऐसा किया था?
क्या मैंने अपने आपको सीमित कर रखा है कि, किसे देना है या किसे नहीं? या फिर मैं किसी भी ज़रूरतमन्द भाई या बहन को देने के लिये तैयार हूँ?
क्या मैं ज़रूरतों को देखता/देखती हूँ? क्या मैं उन ज़रूरतों को जान पाता/पाती हूँ?
क्या मेरा ऐसा मन है कि कम से कम हर दिन एक दूसरे शिष्य के साथ सम्पर्क में रहूँ?
आज मैं/आप किस शिष्य/शिष्यों से सम्पर्क करूंगा/करूंगी? आज सम्पर्क में रहने के कई रास्ते हैं: व्यक्तिगत रूप से मिलना, फोन करना, व्हाट्सअॅप, इ-मेल आदि।
अपने घर में भाईयों और बहनों **के साथ** भोजन करने के लिये क्या आपका मन उत्सुक, खुश और इमानदार है?
प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करो कि हमें एक ऐसा मन दे जो **एक दूसरे** से प्रेम करे, **एक दूसरे** के प्रति वफादार रहे, **एक दूसरे** के साथ लगा रहे, **एक दूसरे** के साथ बांटता रहे, **एक दूसरे** के साथ मिलता रहे, हमारे बीच में ज़ो जरूरतमन्द हैं उन्हें दिया करे, **एक दूसरे** के साथ प्रतिदिन सम्पर्क में रहे, **एक दूसरे** के साथ मिलकर परमेश्वर के वचनों के प्रति लौलीन रहे, संगती में लौलीन रहे, **एक दूसरे** के साथ प्रार्थना में लौलीन रहे, **एक दूसरे** के साथ प्रभु भोज बांटने में जुड़ा रहे।

3 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 3 पढ़ो

पतरस और यूहन्ना **एक साथ** प्रार्थना करने के लिये मन्दिर जा रहे थे।

परमेश्वर ने पतरस के द्वारा जो किया था उसका श्रेय अकेले पतरस ने नहीं लिया।

यद्यपि यूहन्ना ने खुद चंगाई नहीं दीया था, फिर भी हर बात में सम्मिलीत था।

मैं यह देख रहा हूँ कि शिष्यों का मकसद एक था और वह था गुट की साझेदारी में **एक दूसरे** के साथ मिलकर यीशु की गवाही दें।

उन्होंने एकसाथ मिलकर प्रार्थना किया, सहमती से एकसाथ मिलकर काम किया, सब बातों में उन्होंने एक दूसरे को शामिल किया।

चाहे हम कोई भी भूमिका निभाएं, क्या हम एक गुट की तरह एकसाथ मिलकर परमेश्वर की महिमा के लिये काम करते हैं?

क्या पतरस इस प्रलोभन में नहीं पड़ सकता था कि वह इस बात का श्रेय ले कि परमेश्वर केवल उसके द्वारा काम कर रहे हैं यूहन्ना के नहीं।

क्या पतरस के लिये यह एक ऐसा समय नहीं हो सकता था कि उसने जो कुछ किया था उसके लिये वो अपनी ही महिमा करे।

अपने आप की महिमा न करने के लिये किस प्रकार का मन होना चाहिये?

क्या हम नम्र हैं? या फिर दूसरों के वरदानों और प्रतिभाओ से हम जलते हैं?

क्या हम इस बात पर घमण्ड करते हैं कि जो मैं कर सकता हूँ वो दूसरे नहीं कर पाते?

क्या हम श्रेय परमेश्वर को देते हैं या अपने आप को? किसी विशेष रूप में परमेश्वर हमारा उपयोग नहीं कर रहा है इस बात से क्या हम अकेला महसूस करते हैं या फिर जिस तरह से परमेश्वर हमारा उपयोग करने का चुनाव करते हैं क्या उसके कारण हम परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं?

क्या हम एक सचा परिवार हैं, एक सचा शरीर जिसका हर सदस्य अपनी भूमिका निभाता है और हम सब **एक गुट** की तरह परमेश्वर को महिमा देते हैं?

क्या हम इसमें परमेश्वर की महिमा के लिये जुड़े हैं या अपनी महिमा के लिये?

क्या हम ऐसा महसूस करते हैं कि सारी कलीसिया में हमारी मिनिस्ट्री सबसे महत्वपूर्ण है और बाकी सभी को ऐसा महसूस कराते हैं कि शरीर में उनका कोई महत्व नहीं?

हम सभी एक दूसरे के अंग हैं, हैं या नही? क्या हम परमेश्वर की महिमा और हर एक की प्रतिभा की (और जिस तरह से परमेश्वर हर एक का उपयोग करते हैं) सराहना कर सकते हैं; जिसके द्वारा हम अपने सृष्टिकर्त्ता, अपने उद्धारकर्त्ता और अपने प्रभु की सेवा कर सकते हैं।

वचन 19:जब मैं पश्चाताप करता हूँ और परमेश्वर की ओर लौटता हूँ तब ताज़गी का समय आता है।

क्या आप पश्चाताप, ताज़गी और संतुष्टता के राज्य में जी रहे हो?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि आज हम एक दूसरे को शरीर का एक अंग समझें, ध्यान रहे कि अकेला जो यीशु के लिये करता है वो हम सब मिलकर करें, और ताज़गी और संतुष्टता के समय को जीवन में आने का अवसर दें; जो दूसरों के लिये एक गवाही हो।

4 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 4 पढ़ो

बाहरी पहुँच:

वचन 2-18:पतरस और यूहन्ना को पकड़कर धर्ममहासभा के सामने ले गए।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि एक कलीसिया अभी-अभी शुरू हुई और कुछ ही समय में 10,000 लोग उपस्थित हैं, उसका असर हमारे या आपके शहर में कैसा होगा?

प्रसार प्रणाली किस तरह से इसका प्रसार करेगी?

रास्तों और दफ्तरों में क्या बातें होंगी?

क्या वहां पर कोई भय होगा, विशेष रूप से धार्मिक अगुवों के बीच क्योंकि उनके लोग इस नए गुट से जुड़ने लगे हैं?

आओ हम याद करें: **किसी दूसरे के द्वारा उद्धार संभव नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।** (व.12)

हमारे लिये, प्रचार के लिये और विश्वास में बने रहने के लिये इसका क्या अर्थ है?

क्या आप और हम सच में यह विश्वास करते हैं कि केवल यीशु ही एक **मार्ग** है?

भीतरी पहुँच

धर्ममहासभा के सम्मुख कठीन समय में पतरस और यूहन्ना पूरे समय **एकसाथ** थे। सारी कलीसिया ने एकसाथ मिलकर परमेश्वर से प्रार्थना की (व.24)।विश्वास करनेवालों की मण्डली **एक चित्त और एक मन** की थी उनमें **सबकुछ साझे** का था (व.32)।

एकसाथ प्रार्थना करने के लिये हम कितने तैयार हैं?

आखिरी बार कब आपने और मैंने किसी दूसरे के साथ मिलकर प्रार्थना किया?

आखिरी बार कब हमने परमेश्वर का संदेश दूसरों को सुनाने का साहस पाने के लिये प्रार्थना किया?

आपको किसके पास जाकर मेल-मिलाप करना और एक चित्त होना है?

क्या आप इस सप्ताह में एक दिन नियुक्त कर इसे पूरा कर सकेंगे?

क्या हमारा मन यह करने के लिये उत्सुक है या फिर डरता और प्रतिरोध करता है?

आप और मैं कलीसिया के ज़रूरतमन्द लोगों को मदद करने के लिये क्या करने को तैयार हैं? क्या हम हमारी ज़मीन, घर या दूसरी चीज़ें बेचेंगे?

प्रार्थना: एक क्षेत्र में पश्चाताप करने और प्रार्थना करने का निर्णय बनाकर उसे लिखो, ताकि हम पहली शताब्दी के हमारे भाई बहनों का अनुकरण कर सकें।

5 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 5 पढ़ो

प्रेरित इस बात से आनन्दित हुए कि वे यीशु के नाम के लिए निरादर होने के योग्य ठहरे (वचन 41)।
क्या हमारा हृदय उनकी तरह है? यदि हम उन जैसी परिस्थिती में होंगे तो क्या आनन्दित होंगे?
यीशु के प्रति हमारी दृढ़ता के कारण जब हमें सताव होता है या फिर हमें नीचा देखा जाता है तो हमारी प्रतिक्रिया कैसी होगी या कैसी होती है?
उन्होंने कहा, **"मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य-कर्म है"** (व.29)।
क्या हमारे हृदय में पूरी तरह से यह बात स्पष्ट है कि जब मनुष्य और परमेश्वर की बात मानने की बात हो तो हमें हमेशा परमेश्वर की आज्ञा का ही पालन करना है।

भीतरी पहुँच:
वचन 1-11: आपके अनुसार परमेश्वर ने हनन्याह और सफीरा की जान क्यों ली?
कलीसिया को किस बात का डर था?
यह करने के लिये हनन्याह और सफीरा के मन की कौनसी बात ने उन्हें मजबूर किया?
1. पैसे का प्रेम 2. प्रशंसा से प्रेम
यह दोनों ही सिर्फ अपने बारे में सोचना है। यह है दूसरों का **इस्तेमाल** "अपने" लिये कुछ पाने के लिये करना।
जब हनन्याह और सफीरा ने परमेश्वर का उपयोग किया तो परमेश्वर को कैसा लगा होगा?
क्या आपके और मेरे मन में इनमें से एक या ये दोनों बातों की समस्या है?
क्या आप इससे लड़ते हो? या फिर खुद की महिमा और पैसों के प्रेम के कारण हार मान जाते हो?
पैसों से प्रेम और प्रशंसा, इन दो बातों के साथ धोखा और झूठ आते हैं?
आओ हम अपने हृदयों को जांचे। इन बातों में हम कहां हैं?
हम सच में किस बात की कदर करते हैं? देने में हम कैसे हैं?
खुद की महिमा का क्या कोई चिन्ह दिखाई पड़ता है? यह हमें मदद करेगा कि हम सच्चाई से बात करें और अनुभव से **एक दूसरे और परमेश्वर के प्रति** हमारे प्रेम और अच्छे काम करनेवाले हमारे मन को पहचानें। यह चाबी है; एकता में रहने और मसीह की तरह बनने की।

प्रार्थना: यदि पैसों से प्रेम और प्रशंसा के बादल हमारे उद्धार पर मंडरा रहे हैं तो उसके लिये प्रार्थना करो और मदद लो। कबूल करो और पश्चाताप करो, यदि धोखा और झूठ है तो हमें उसका हिसाब देना पड़ेगा।

6 जनवरी 2018 प्रेरितों अध्याय 6 पढ़ो

वचन 1-7: प्रेरितों ने इस बात की जिम्मेदारी युनानी भाषा बोलनेवाले यहूदी मसीहियों को क्यों दी?
इस परिस्थिती को प्रेरितों ने जिस तरह से संभाला उसके लिये उनके मन का स्वभाव कैसा था?
हमारी कलीसिया में भिन्न-भिन्न भाषा और संस्कृति के लोगों के गुट के लिये विशेष मिनिस्ट्री के बारे में यह अनुछेद क्या कहता है?
इस प्रकार के गुट में हमारी कलीसिया के कौनसे लोग होंगे?
वो जो ज़रूरत को देखते और उन्हें पूरा करने में भाग लेते हैं और जिनमें मदद करने की प्रतिभा है, उनसे बेहतर और कौन हो सकता है जो ज़रूरतों का ध्यान रखे?
इसमें आपका और मेरा स्थान कहां है?
हमारी कलीसिया की किस ज़रूरत को आप और मैं देख पाते हैं? आप में या मुझ में ऐसी कौनसी प्रतिभा है जिसका उपयोग हम इन ज़रूरतों को पूरा करने में कर सकते हैं?
क्या आप मदद करने के लिये तैयार हैं या सिर्फ कुड़कुड़ाने और आलोचना करनेवाले गुट का हिस्सा बनकर रहना चाहते हो-ज़रूरतों को देखकर भी मदद के लिये तैयार नहीं।
प्रार्थना: अपने कलीसिया के लोगों की एक विशेष ज़रूरत को पहचानो और खुद सामने आकर अपनी प्रतिभा के वरदानों का उपयोग भीतरी लोगों तक प्रेम से पहूँचने में करो। प्रार्थना करो कि हम यह नि:स्वार्थ भाव से करें।

7 जनवरी 2018 प्रेरितों अध्याय 7 पढ़ो

वचन 50: हठीले मन वाले होने का अर्थ क्या है?
हम ऐसे हैं; हमें कब पता चलता है?
मन और कान के खतनारहित होना, इसका अर्थ क्या है?
क्या आपका या मेरा मन खतनारहित है? यह कैसे पता चलेगा?
पवित्र आत्मा का प्रतिरोध/विरोध हम कैसे करते हैं? क्या हम कभी उसका प्रपितरोध करते हैं?
हमारे जीवन में ऐसे कौनसे चिन्ह हो सकते हैं जो हमें पवित्र आत्मा का प्रतिरोध करने से रोक सकते हैं?
क्या आप और मैं आत्मा की अगुवाई में चलते हैं? आपको कैसे पता?
क्या हम सही में चाहते हैं कि पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करे? यह कैसे हो पाएगा?
यदि हम स्तिफनुस के समय वहां होते तो क्या हम भी उनमें से एक होते जो उसे पत्थर से मार रहे थे?
या फिर हम परमेश्वर के अधिन होकर उसकी मदद करते?
क्या हम अपने विश्वास के लिये मरने और अच्छे काम करने के लिये सताव सहने के लिये तैयार हैं?
क्या हम स्तिफनुस की तरह अपने दुश्मन के लिये प्रार्थना करने के लिये तैयार हैं, जैसा उसने कहा, "हे प्रभु ये पाप उनपर मत लगाना" (व.60)?
ऐसा करने के लिये किस प्रकार के हृदय की आवश्यक्ता है?
प्रार्थना: प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें उनके पवित्र आत्मा से भर दे ताकि मरते दम तक हम स्तिफनुस की तरह पूरे साहस, बुद्धिमानी और अनुग्रह के साथ उनके वचनों का प्रचार कर सकें।

8 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 8 पढ़ो

हम यहां पर दो प्रकार के हृदय देखते हैं।

अ. शिमौन जादूगर का हृदय (व.1-25):

परमेश्वर के सामने उसके हृदय को सही होने की आवश्यक्ता थी (व.21)

उसे पश्चाताप करना था (व.22)

उसका हृदय पूरी तरह से कड़ुवाहट से भरा और पाप के अधिन था(व.23)

आज हमारा हृदय कहां है?

क्या इनमें से कोई बात हमसे मेल खाती है?

क्या हम इस बात के प्रति वचनबद्ध हैं कि हम हरएक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना दें (2कुरू.10:5)?

आपके और मेरे मन में हाल ही में वो कौनसे विचार आए जिसे हमने बढ़ने दिया जो परमेश्वर की इच्छा के विरूध है और जिसे हमें कैद करना है ?

ब. इथियोपियाई का हृदय (वचन 26-40)

यदि ज़रूरत पड़े तो क्या हम परमेश्वर की आराधना और सेवा करने के लिये लम्बा सफर तय करके जाने के लिये उत्सुक और तैयार हैं?

या फिर हमने एक दूरी बना ली है और सीमा बान्ध ली है कि उसके परे हम नहीं जाएंगे? (व.27)

क्या हमारा ऐसा मन है जो परमेश्वर के करीब आने के लिये लगातार वचनों को ढूंढता रहता है? क्या हम नम्र हैं और चाहते हैं कि हमारे जीवन में वचनों को समझने में हमारी मदद करनेवाले हों और हम यीशु की तरह बनते जाएं? क्या हमारे कान सुनने और हमारे हृदय संदेश ग्रहण करने के लिये तैयार हैं? (व. 28-35)

परमेश्वर अपने वचनों के द्वारा जिस किसी बात की प्रतिक्रिया की अपेक्षा हमसे करते हैं क्या हम तुरन्त उसे करने के लिये उत्सुक रहते हैं?(व.36-36)

क्या हमारा हृदय परमेश्वर के लिये आनन्दित और आभारी है? (व.29)

आपके और मेरे पास कैसा मन है? हम कैसा मन पाना चाहते हैं?

प्रार्थना: आओ आज हम इथियोपियाई की तरह मन पाने के लिये प्रार्थना और काम करें!

9 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 9 पढ़ो

ऊपरी पहुँच:

वचन 1-32

परमेश्वर के भय में जीने का अर्थ क्या है? क्या आप और मैं इसे कर रहे हैं? क्या ऐसी कोई बात है जो आपको फिर से सही पटरी पर लाने के लिये परमेश्वर ने किया या कर रहे हैं? आपके लिये उनकी योजना क्या है? क्या आप उनसे लड़ रहे हो?

क्या हम सुन रहे हैं? क्या हमारे जीवन में परमेश्वर की ओर से संदेश के रूप में कोई ज्योति चमक रही है? वो क्या हो सकता है?

भीतरी पहुँच:

वचन 32-43

जब हम एक दूसरे से प्रेम और सेवा करते हैं (जैसा पतरस ने एनियास और तबीता के साथ किया, और तबीता ने गरीबों के साथ किया) तो संसार में क्या होता है? जब संसार हमारे अन्दर प्रेम के सामर्थ, पवित्र आत्मा और हमारे रिश्तों को देखता है तो क्या कोई प्रतिक्रिया नहीं करता? जब हम मिनिस्ट्री में एक दूसरे के साथ भीतरी पहुँच का काम करते हैं तो इसके द्वारा कैसे हम पवित्र आत्मा को हमारे द्वारा काम करने की अनुमती देते हैं?

बाहरी पहुँच:

जब हम ऊपरी पहुँच और भीतरी पहुँच की ओर ध्यान देते हैं तो वो हमें बाहरी पहुँच की ओर ले जाएगा और **कलीसिया संख्या में बढ़ेगी।**

प्रार्थना: हमारे परिवार और पारिवारिक गुट की संगती परमेश्वर की कलीसिया को बढ़ाने का कारण बने इसके लिये प्रार्थना करो।

10 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 10 पढ़ो

परमेश्वर का सुसमाचार यहूदियों और सामरी राज्य तक पहुँच चुका था, अब उसे अन्यजातियों में फैलाया जा रहा था।

हमारे आज के संसार के उन लोगों के बारे में **व.2** क्या कहता है; जो परमेश्वर का भय मानते हैं लेकिन अब तक शिष्य नहीं बने हैं?

क्या परमेश्वर उनकी प्रार्थनाओं को सुनेंगे? क्या वे उद्धार पा चुके हैं? किस बात की कमी है?

क्या हम उनके पास ऐसे जाते हैं कि हम उनसे कहीं बेहतर हैं या फिर दीनता और दया से भरे मदद करनेवाले सेवक का मन लेकर जाते हैं?

खोए हुओं के प्रति हम किस प्रकार का मन रखते हैं?

क्या हम उन्हें हमसे बेहतर जानते हैं?

आपको क्या लगता है पतरस के लिये अपनी गलती स्वीकार करना कितना कठीन रहा होगा?

आज आपके लिये कौनसे रिती-रिवाज़ हैं जिन्हें बदलना आपके लिये कठीन लग रहा है?

क्या ऐसे कुछ बाधाएं हैं जो हमें गैर मसीहियों के पास जाने या फिर मसीहियों के पास भीतरी पहुँच से भी रोके हुए है?

क्या आपके जीवन में ऐसा कोई व्यक्ति है जिसके साथ मिलना आपको पसन्द नहीं? वो कौन हो सकता है? क्यों हो सकता है?

इसपर विजय पाने के लिये आपके मन में किस बदलाव की आवश्यक्ता है? क्या आप इससे जीतना चाहते हैं?

पतरस यह जानता था कि यद्यपि उन्हें विशेष रूप में पवित्र आत्मा का दान मिला था फिर भी उन्हें पानी से बप्तीस्मा लेने की आवश्यक्ता थी।(व.46)

बप्तीस्मा लेना कितना महत्वपूर्ण है?

क्या एक व्यक्ति बिना बप्तीस्मा लिये सिर्फ विश्वास के सहारे मसीही जीवन जी सकता है?

पानी से बप्तीस्मा क्या करता है?

आओ हम समय असमय परमेश्वर के वचनों का सही प्रचार करें और परमेश्वर की योजना को कसकर पकड़े रहें।

11 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 11 पढ़ो

भीतरी पहुँच:

वचन 22-30: उन्होंने अपनी यात्रा से समय निकाला और धार्मिक प्रचार करके नए मसीहियों को मजबूत बनाने का प्रयत्न किया।

क्या हम अपने लोगों के लिये समय निकाल रहे हैं कि उन्हें प्रभु में मजबूत बनाएं, मदद करें और परिपक्व होने के लिये उन्हें प्रोत्साहन दें? क्या हमारा हृदय लोगों को परिपक्व बनाने में लौलीन है या हम सिर्फ उन्हें मसीही बना रहे हैं?

इस क्षेत्र में मदद करने के लिये आपमें कौनसी प्रतिभा/प्रतिभाएं हैं?

अपने बायबल टॉक में आप किसे देख रहे हैं जिसे परिपक्व बनाने में मदद की आवश्यक्ता है जो आगे चलकर आपकी मदद कर सकता है? क्या आप आज से ही मदद करना आरंभ कर सकते हैं?

वचन 27-30: मदद करने के लिये; विशेष रूप से दूसरी कलीसियाओं के भाई बहनों को मदद करने के लिये किस प्रकार के मन की आवश्यक्ता है?

क्या हमारा मन ये करने के लिये तैयार है?

"अपनी क्षमता के अनुसार देने" का अर्थ क्या है?

इसे निश्चित कैसे किया जा सकता है? क्या आप और मैं ऐसा कर रहे हैं?

क्या हमें अपने अगुवों पर विश्वास है? कि वो इसका उपयोग सही रीति से करेंगे, जैसा अन्तुकिया के लोगों ने यरूशलेम के लोगों के साथ किया?

क्या अगुवों पर भरोसा या परमेश्वर पर विश्वास के साथ दया के कारण उन्होंने दिया?

नगर, कोल्हापूर, सोलापूर, औरंगाबाद की कलीसियाओं में हमें कौन ऐसा दिखाई पड़ता है जिसे हम मदद कर सकते हैं?

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करो कि हमें ऐसा मन दे जो दूसरे नए और पुराने मसीहियों को परिपक्व बनाने के लिये तैयार हो और साथ ही अपनी क्षमता के अनुसार दें ताकि दूसरी कलीसिया के शिष्यों को मदद मिल सके।

12 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 12 पढ़ो

पतरस को देखकर शिष्य चकित क्यों हुए? **(व.16)**
क्या उनमें विश्वास की कमी थी?
क्या हमें यह विश्वास है कि परमेश्वर हमारे जीवन में और हमारी कलीसिया में चमत्कार करेंगे? जब वो हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं तब क्या हम अचंभित होते हैं या फिर उसे चमत्कार का रूप देते हैं?
जब आप अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाते हो तो आपको कैसा महसूस होता है?
क्या अचंभित होते हो? क्या नम्र होते हो? क्या आभारी होते हो?
क्या हमारा हृदय आनन्द, अचंभा और महिमा से भरकर जीवित हो उठता है?

हेरोदेस यहूदियों को खुश करना चाहता था इसलिये उसने पतरस को कैद किया। **(व.1-2)**
हेरोदेस का मन कैसा था? वह किसे खुश करना चाहता था? क्या वो सिर्फ यहूदियों को खुश करना चाहता था?
हो सकता है कि इसके द्वारा वो खुद पर लोगों का ध्यान और महिमा चाहता था?
क्या हमारा हृदय कभी खुद पर लोगों का ध्यान और प्रशंसा चाहता है? क्या हम यह चाहते हैं कि दूसरों के सामने हमें ऊंचा उठाया जाए?
वास्तव में हम कितना ऊपर उठना चाहते हैं?
यदि हम पूरी महिमा परमेश्वर को नहीं देंगे तो क्या परमेश्वर हमें मार डालेंगे? **(व.23)**
हम कब अपनी प्रशंसा करना चाहते हैं? खुद की प्रशंसा दुष्टता क्यों है?
सारी महिमा और प्रशंसा का हकदार कौन है? **(प्र.वा. 4:11)**

प्रार्थना: परमेश्वर से प्रार्थना करो कि हम हमारे हृदय में नए मनुष्यत्व को स्वतंत्र करें ताकि जीवन के हर क्षण सारी महिमा हम परमेश्वर को दे सकें।

13 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 13 पढ़ो

पौलूस और बरनबास साधारण तौर पर हर शहर में प्रचार करने के लिये सबसे पहले यहूदी आराधनालयों में जाते थे **(व.14)** जब हम सुसमाचार बांटते हैं तो हम किस बात की आशा करते हैं? यहूदी पौलूस और बरनबास से जलने लगे।

आपके अनुसार यहूदी पौलूस और बरनबास से क्यों जल रहे थे? क्या आप और मैं कभी किसी पर जलन रखते हैं? क्या हमारे जीवन में कोई ईर्ष्या है जो हमें सच्चाई को देखने नहीं दे रहा है?

पौलूस ने झूठे नबी बार-यीशु (जिसे इलीमास टोन्हा करनेवाला भी बुलाया जाता था) **का बड़े सख्ती से विरोध किया। (व.7-11)**

जब हम अपने जीवन में, अपने पती/पत्नी के जीवन में, अपने भाई-बहनों के जीवन में, या दूसरों के जीवन में गलत शिक्षण देखते हैं तो क्या हम पूरी सख्ती से उसका विरोध करने का मन रखते हैं? या फिर हम उस पर "ध्यान नहीं देते"?

वचन 46-51:

तब पौलूस और बरनबास ने उनके सामने अपने पांवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को गए। (व.51)

"पैरों की धूल झाड़ना" इसका अर्थ क्या है?

जैसा पौलूस और बरनबास ने यहां किया; क्या कभी-कभी **"दूसरों का विरोध"** करना सही है?

आपको क्या लगता है उस समय पौलूस और बरनबास के मन में क्या था? गुस्सा? दु:ख? दया? संकल्प?

ऐसा करके उन्होंने पाप किया या फिर धार्मिक्ता का काम किया?

सुसमाचार में अपने सतानेवालों के प्रति यीशु का स्वभाव और क्रिया क्या थी?

जब हम दूसरों तक उद्धार का संदेश ले जाते हैं और उसे वो नहीं अपनाते; तब हमारा स्वभाव और मन कैसा होना चाहिये?

प्रार्थना: परमेश्वर से मदद मांगो कि **1**. परमेश्वर का वचन बांटने के लिये हम कारण और मौके ढूंढें **2**. जब हम सुसमाचार बांटते हैं तो इस बात के लिये तैयार रहो कि धार्मिक अगुवे हमसे जलेंगे; **3**. जो लोग गलत शिक्षण दें और लोगों को सच्चे विश्वास से भटकाने का प्रयत्न करें तो उनका विरोध सख्ती से और निश्चित रूप से करने के लिये अपने मन को संकल्पित करें और **4**. जो हमारा सताव करते और सुसमाचार का इन्कार करते हैं उनके प्रति आत्मिक मन रखें। क्या यह सब बातें **बाहरी पहुँच का मन** रखने का एक भाग नहीं हैं?

14 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 14 पढ़ो

ऊपरी पहुँच

वचन 8-18:

उन्होंने एक लंगड़े को चंगा किया जिसे "विश्वास था कि वह चंगा होगा"। (आपके अनुसार वो विश्वास क्या था?)

पौलूस और बरनबास ने स्वर्ग के परमेश्वर को महिमा दी। क्या हम कभी परमेश्वर या दूसरों की महिमा को चुराने का प्रयत्न करते हैं?

पौलूस और बरनबास ने अपने द्वारा परमेश्वर को काम करने की अनुमती दी, ताकि चमत्कार के चिन्ह और अचंभा हो सके।

व.3 कहता है कि चमत्कार का मुख्य उद्देश्य **परमेश्वर के वचनों की पुष्टी करना** था।

क्या आज परमेश्वर चमत्कारों के द्वारा अपने संदेश की पुष्टी करते हैं या फिर पहली शताब्दी में दृढ़ता से पुष्टी और नए नियम में उनके वचनों के लिखे जाने के बाद यह बन्द हो चुका है?

क्या आज भी हम यह इच्छा रखते हैं कि हमारे पास चमत्कार करने की शक्ति हो?

क्या आज चमत्कार परमेश्वर के संदेश की पुष्टी करेंगे या फिर सिर्फ हमें अचंभित और हमारी इच्छाओं को पूरा करेंगे?

यदि हमारी यह इच्छा है तो क्या हमारे मनों के लिये कोई संदेश है? जो चिन्ह ढूंढते हैं उनके मन में क्या विचार होते हैं?

भीतरी पहुँच:

वचन 23- धर्मवृद्ध अगुवे और चरवाहे थे जो झुंड का ध्यान रखते और उनको मार्गदर्शन देते थे। आपको क्या लगता है क्यों परमेश्वर इतने सारे धर्मवृद्ध हर कलीसिया में चाहते थे?

क्या हमारा ऐसा मन है जो उनका ध्यान रखने के लिये तैयार है जिन्हें हमने मसीह बनने में मदद किया है?

मिनिस्ट्री में जिनके पास चरवाहे और अगुवे का वरदान है क्या हम उनकी मदद करते हैं?

क्या हम चाहते हैं कि हरएक शिष्य का हम ध्यान रखें?

कलीसिया में हमारे द्वारा परमेश्वर जो दूसरों के साथ कर रहे हैं क्या वो हम लोगों के साथ बांट रहे हैं?

हाल ही में परमेश्वर ने आपके लिये क्या किया? परमेश्वर के कामों को क्या हम देख पा रहे हैं या फिर हमारी आंखें धुंधली हो गई हैं? आप क्या बांट सकते हो?

दूसरों के साथ परमेश्वर ने जो किया और वो बात जब उन्होंने आपके साथ बांटा तो आपने कैसे प्रोत्साहन पाया?

बाहरी पहुँच:

पौलूस पर पत्थराव करने के बाद उसे मरा हुआ समझकर छोड़ देने के बाद वह फिर से उठकर शहर में गया। (व.19)

यदि आपपर या मुझपर पत्थराव होता तो क्या हम प्रचार करना छोड़ देते?

हम कितने दृढ़ हैं? खोए हुओं को बचाने के लिये मदद करने में हम कितना जी-जान लगाते हैं? खोए हुओं को बचाने के प्रति आपका और मेरा मन कितना दृढ़ है?

प्रार्थना: परमेश्वर से मांगो कि उनका वचन फैलाने के लिये हमारा भी ऐसा जोश भरा मन हो।

15 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 15 पढ़ो

आपको क्या लगता है, क्यों यहूदी खतना करने पर इतना दबाव डाल रहे थे?
क्या उनको गलत बात बताई गई थी? क्या वे परम्परा को अपना रहे थे? उनके दिलों में क्या बात रही होगी?
क्या उनको इस बात का डर था कि मूसा और उनकी आज्ञाओं को अमहत्वपूर्ण समझा जाएगा?
आज जब हम परमेश्वर के उद्धार की योजना के बारे में गलत बात सुनते हैं तो हमारे मनों में क्या होता है?
क्या हमारा मन ऐसा है जो गलत शिक्षण को "मान" लेता है या फिर हमारा ऐसा मन है जो उद्धार की योजना के प्रति झूठे शिक्षण का दृढ़ता से विरोध करता है?

समस्या को सुलझाने के लिये क्या करना है इसका निर्णय किसने लिया? (व.22)
क्यों प्ररितों ने अकेले इसका निर्णय नहीं लिया?
क्या हम दूसरों की राय लिये बिना ही अपना निर्णय बना लेते हैं?
उन्होंने धर्मवृद्धों को इसमें शामिल क्यों किया?
इस समस्या को सुलझाने में यहां हमें अगुवाई का कैसा मन दिखाई देता है?
इस बात पर ध्यान दो कि न केवल प्ररितों और धर्मवृद्धों ने इसे सुलझाने में भाग लिया, परन्तु अन्ततः ऐसा प्रतीत होता है कि सारी कलीसिया इस निर्णय में शामिल हुई, या इसे किस तरह से सुलझाया जाए उसमें भाग लिया। (व.२२)
उद्धार पाने के लिये खतना और मूसा की आज्ञाओं का पालन करने की आवश्यक्ता ने उनके "**मनों को विचलित क्यों किया**"?
कौनसी **चार बातें** वो चाहते थे कि अन्यजातियां मानें?
जब लोग उद्धार का प्रचार हमारे विश्वास के अनुसार नहीं करते तो क्या हमारा मन विचलित हो जाता है? ऐसा क्यों होता है; आपके विचार क्या हैं?
बप्तीस्मा और पवित्र आत्मा आदि के बारे में गलत शिक्षण क्या आपके मन को विचलित करता है?
आप उद्धार की जिन बातों पर विश्वास करते हैं वह सही है; यह सुनिश्चित करने के लिये क्या आपने वचनों को पढ़ा? क्या आप एक सचे बिरियाई हो, जिनका अपना खुद का दृढ़ संकल्प वचनों पर आधारित था?
क्या आप और मैं दूसरों के मनों को परेशानी में डालते हैं या उन्हें सुकून पहुँचाते हैं?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि हमारा ऐसा मन हो जो **1**. परमेश्वर के उद्धार का सही प्रचार और शिक्षण दे **2**.जिस तरह से यरूशलेम के अगुवों ने समस्याओं को सुलझाने के लिये अनेक शिष्यों को शामिल किया हम भी उसी प्रकार करें और **3**. मन को शान्ति देनेवाले निर्देश दें ताकि लोग विचलित न हों।

16 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 16 पढ़ो

प्रेरितों **15:36** से **18:22** में हमें पौलूस के **दूसरे धर्मप्रचार की यात्रा** के बारे में पता चलता है।
पौलूस फिर से उन शहरों में क्यों गया जिसमें वो पहले जा चुका था? उन नए मसीहियों के प्रति उसका मन कैसा था?

नए मसीहियों के प्रति आपका मन कैसा है?

अपने यात्रा के आरंभ में यूहन्ना जो मरकुस भी कहलाता था उसे अपने साथ ले जाने के बात पर **पौलूस और बरनबास में मतभेद हुआ**; क्योंकि पहली धर्मयात्रा में यूहन्ना उन्हें पंफुलिस में छोड़कर चला गया था (प्रेरितों 13:13 और 15:38)। इसके फलस्वरूप बरनबास यूहन्ना को लेकर साइप्रस चला गया और पौलूस ने अपने साथ सिलास को ले लिया। आपके विचार से पौलूस और बरनबास इस बात पर समझौता क्यों नहीं कर पाए? बरनबास मरकुस को अपने साथ ले जाने पर इतना इच्छुक क्यों था? मसीहियों के बीच मतभेद क्यों होता है?

ऐसा प्रतीत होता है कि बाद में पौलूस और यूहन्ना मरकुस में मेल हुआ और पौलूस कहता है कि उसकी मिनिस्ट्री के लिये वह उपयोगी होगा (2तीमु.4:11 देखें)। इस बात में कौन सही और कौन गलत था? क्या यह बात कोई मायने रखता है? क्या दोनों ही गलत और दोनों ही सही हो सकते हैं?

मतभेदों को लगातार सुलझाने में लगे रहने और हार न मानने के लिये किस तरह के मन की आवश्वक्ता है?

आपके या मेरे मन में क्या बात है?

तीमुथियुस को अपना खतना करवाने के लिये तैयार होने के लिये कैसे मन और कैसी लौलीनता की आवश्यक्ता थी ?**(व.3)** आपके विचार से पौलूस को यह ज़रूरी क्यों लगा?

पौलूस और सिलास को बंदीगृह में डालने के बाद फिलिप्पी दारोगा का हृदय-परिवर्तन हुआ।

उन्हें बहुत सख्त कोड़े मारे गए और पैरों को लकड़ी से जकड़ा गया। (व.23-24) यदि यह हमारे साथ होता तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होती?

इन सभी बातों के बीच **पौलूस और सिलास प्रार्थना करते और परमेश्वर के भजन गाते रहे** (व.25)।

हरएक अवसर को यीशु की गवाही के लिये उपयोग करने में ये दोनों कितने संकल्पित थे? क्या हम ऐसा करते हैं?

इस तरह की बातों के बीच परमेश्वर की आराधना करने के लिये किस प्रकार का मन होना चाहिये? क्या आप और मैं ऐसा कर पाएंगे?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें ऐसी एकता दे जो हमें अनुग्रह और एक दूसरे के अधिन रहने में मदद करे और परमेश्वर के प्रति वो लौलीनता दे जो मरते हुए भी आत्माओं को जीते।

17 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 17 पढ़ो

भीतरी पहुँच : पौलूस और सिलास की रक्षा के लिये सभी भाई आगे आए।(व.10)
किसी विपत्ती से, दूसरों के गुस्से से या दूसरी बातों से हमारे भाईयों बहनों को बचाने के लिये हम कितनी जल्दि मदद के लिये आते हैं? मदद करने के लिये एक दूसरे के जीवनों से हम कितने जुड़े हैं?

बाहरी पहुँच: सुसमाचार फैलाने में पौलूस का साहस और जुनून। आराधनालयों में जाने के लिये (व.2,10,17), यीशु के बारे में समझाने और उनकी बातों का सबूत देने में(व.3), उनके साथ जुड़ने के लिये लोगों को मनाने में(व.4) उन्होंने कड़ी मेहनत की, और बहुत सारे लोग उनके साथ मिल गए(4)। पौलूस से ईर्ष्या करनेवाले यहूदियों ने बुरे चरित्रवाले लोगों को जमा किया ताकि वो पौलूस को सता सके (व.5,13), इसके बावजूद भी पौलूस ने हार नहीं मानी। यह करने के लिये पौलूस को प्रेरणा कहां से मिली? शहर को मूर्तियों से भरा देख पौलूस "अत्यन्त दु:खी" क्यों हुआ?(व.16)
हमारे शहर में चारों ओर मूर्तियां देखकर हम कितने दु:खी हैं? या क्या हमें मूर्तियां दिखाई भी देती हैं? क्या यह सच है कि जितना अधिक हम खुद मूर्ती पूजा में गिरेंगे उसके बारे में हम उतना ही कम दु:खी और कम चिन्तित होंगे? हम किन मूर्तियों के प्रति लौलीन हैं?
क्या हम इस तैयारी में लगे हैं कि लोगों को मसीही बनने के लिये मनाते रहें?
अपका वरदान और अवसर क्या है? क्या आप उसका उपयोग लोगों तक यीशु का संदेश पहुँचाने के लिये कर रहे हैं? और अधिक प्रोत्साहित होने के लिये आज हमें क्या करना होगा?

ऊपरी पहुँच: पौलूस जब भी प्रचार करता तो वह पुनरूत्थान के बारे में बात करता (व.3,18,31)। यीशु के पुनरूत्थान की बात करने से क्या परमेश्वर को महिमा मिलती है? इसके बारे में बात न करने से क्या परमेश्वर को महिमा नहीं मिलती?
सभी मनुष्यों के लिये जो पुनरूत्थान आ रहा है क्या हम उसके बारे में बात करते हैं?
यीशु के पुनरूत्थान का परमेश्वर का काम आपके और मेरे लिये कितना महत्व रखता है?
हमारे लिये हमारा पुनरूत्थान कितना महत्वपूर्ण है? क्या हम खुले आम इसे सबके साथ बांटते हैं या सिर्फ उन लोगों के साथ जिनके साथ हम पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हैं?
क्या आप अथेनियों की तरह-दार्शनिक हैं या बिरीया के लोगों की तरह-आदर्श?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि परमेश्वर भीतरी पहुँच के द्वारा दूसरों को बचाने में हमारा उपयोग करने के लिये आज हमें सक्रीय करे, बाहरी पहुँच में लोगों से साहस से बातें करने में, और ऊपरी पहुँच में यीशु और हमें मुर्दों में से जिलाने के परमेश्वर के पराक्रमी शक्ति की महिमा करें।

18 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 18 पढ़ो

प्रेरितों 18 पौलूस के दूसरे धर्मयात्रा की समाप्ती के बारे में बताता है (जो वचन २२ में, जब वह अंतुकिया में आते हैं तब समाप्त होता है)। तीसरे धर्मयात्रा का आरंभ वचन २३ में होता है जब पौलूस फिर से गलातिया और फ्रुगिया और दूसरे प्रदेशों को जाते हैं। इससे पहले अध्याय 18:11 में हम देखते हैं कि पौलूस डेढ़ वर्ष तक कुरिंथ में रहकर वचनों का प्रचार करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पौलूस का ऐसा मन है, जो परमेश्वर के वचनों के कार्य में खुद को स्थीर बनाए रखने के लिये कुछ भी करने के लिये तैयार है। परमेश्वर के वचनों के प्रचार की मिनिस्ट्री में पूरे समय के लिये काम करके आर्थिक रूप से खुद को सहायता करने की जगह होती है।

हम सभी को यह देखना चाहिये कि हमारे लिये भी परमेश्वर की कोई मिनिस्ट्री हो जिसे कभी-कभी शायद पूरी तरह से आर्थिक मदद मिल सकती है और कभी नहीं भी। हममें से हरएक को अपने आप को पूरे समय के मिनिस्ट्री में काम करनेवाले की तरह देखना चाहिये, अर्थात् हम जहां भी जाएं यीशु के लिये काम करें।

जितने ज्यादा लोग जिन्हें वचनों के प्रचार का आत्मिक वरदान और दूसरी प्रतिभाओं का वरदान मिला है अपना समय परमेश्वर के कामों के लिये देंगे, उतना अधिक वो यीशु के लिये कर पाएंगे।

क्या आप अपने काम को परमेश्वर के, कलीसिया के काम/सेवा करने का और सुसमाचार को फैलाने का एक जरिया समझते हैं?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि हम पौलूस का अनुकरण करने की कड़ी मेहनत करें और चाहे आज हम जैसी भी परिस्थिती में हैं यह जानकर आन्दित रहें कि हमें यीशु की सेवा करने का सौभाग्य मिला है।

19 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 19 पढ़ो

प्रेरितों 19 में हम पाते हैं कि पौलूस इफिसूस में दो वर्ष और तीन महीने तक प्रचार करते और शिक्षण देते रहे।(व.8-10) उनका प्रचार और शिक्षण इतना प्रभावशाली था कि, **"आसिया** (अभी टर्की है)**के रहनेवाले सभी यहूदी और यूनानियों ने प्रभु का वचन सुन लिया"**।(व.10) यह अविश्वसनीय है! तीन वर्षों में पौलूस ने इफिसूस से टर्की के बड़े भाग में परमेश्वर का वचन फैलाया!
यह एक बाहरी पहुँच का अविश्वसनीय अध्याय है!
क्या हम तीन वर्षों में हमारे शहर में यह कर सकते हैं? हाँ यह संभव है। पौलूस ने कैसे किया?

1. वह उद्धार की योजना को पकड़े रहा (व.1-7)
क्या हम पौलूस की तरह उद्धार की सच्ची योजना को दृढ़ता से थामे और स्पष्टता से सीखाते हैं?
क्या हमें सच में इस बात की चिन्ता है कि लोगों के पास पवित्र आत्मा नहीं है?

2. पूरी लगन के साथ पौलूस परमेश्वर के राज्य की बात करता रहा (व.8)
परमेश्वर के राज्य के बारे में पूरी लगन से कैसे बात करना है; क्या हम ये जानते हैं? राज्य क्या है?
हम पूरी लगन से कैसे वाद-विवाद कर सकते हैं? क्या हम यह सीखने के लिये तैयार हैं?
क्या हम सीखने और दूसरों को यह सीखाने में मदद करने के लिये तैयार हैं? आज के संसार में आप और मैं हमारे विश्वास की रक्षा करने और फैलाने में कितने दृढ़ हैं?

3. पौलूस अपने शिष्यों को अपने साथ ले गया और प्रतीदिन तुरन्नुस के विद्यापीठ में उनसे चर्चा किया(व.9)
हमारी योजना क्या है? आज के दिनों में तुरन्नुस के विद्यापीठ के समान क्या है? क्या वो हमारे कॉलेज की जगह/ हमारे ऑफिस का कॅन्टीन/ हमारा घर/ गार्डन हो सकता है?

4. पौलूस का ऐसा प्रभाव पड़ा कि, देमेत्रियुस नामक एक सुनार जो (अरतिमिस देवी के मन्दिर बनवाकर इफिसियों को बेचता था) उसे अपना नाम और व्यापार खोने का और अरतिमिस के मन्दिर को तुच्छ समझे जाने का खतरा था।(व.23-29)
हमारी गवाही कितनी प्रभावशाली है? हमारे शहर में हम इसे कितना प्रभावशाली बनाना चाहते हैं?

प्रार्थना: आओ हम अच्छे धार्मिक प्रभाव के लिये प्रार्थना करें और अपने आपको आनेवाले सताव के लिये दृढ़ करें।

20 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 20 पढ़ो

प्रेरितों 20 में हम पाते हैं कि पौलूस मकिदूनिया, यूनान और फिलिप्पी फिर त्रोआस,अस्सुस, मितुलेने, खियुस और मिलेतुस से होकर पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम पहूँचा।(व.17)

वचन 7: "सप्ताह के पहले दिन हम रोटी तोड़ने (प्रभु-भोज) के लिये इकट्ठे हुए"।
नए नियम का यह एक मुख्य वचन है (1कुरू.11:17-26 और पहली शताब्दी की कलीसिया के साथ) जो हमें यह बताता है कि कलीसिया सप्ताह के पहले दिन अर्थात् **"हर रविवार"** को प्रभु-भोज लेने के लिये **"एकसाथ"** इकट्ठा होते थे।
यह समय होता है प्रभु-भोज द्वारा यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरूत्थान को याद करने का।
हमारी कलीसिया की सभा में आप और मैं रविवार को किसलिये आते हैं?
क्या प्राथमिक रूप से यीशु को याद करने लिये? या फिर आपके लिये यह सिर्फ एक रीति-रिवाज़ है?
क्या हम मनोरंजन के लिये आते हैं? आपको कैसे पता चलता है?
आपका मन कहां है?
क्या प्रभु-भोज आपके और मेरे लिये एक रोजमर्रा की बात बन गया है? परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के बारे में यह क्या बताता है? हम इसे फिर से ताज़ा कैसे कर सकते हैं?

वचन 35: यीशु ने कहा, "लेने से देना बेहतर है"
पौलूस ने धर्मवृद्धों से यह क्यों कहा?
क्या वह उन्हें यह जिम्मेदारी दे रहे थे कि वो अपने परिश्रम से देकर गरीब और ज़रूरतमन्द लोगों की मदद करें?
क्या हम सभी यीशु के वचनों का पालन करते हैं?
हमारा ध्यान देने में है या लेने में? क्या हम अधिक से अधिक देने की योजना बनाते हैं?
आज हम किस शिष्य/शिष्यों को दे सकते हैं?
(व.25,38) आपके विचार से धर्मवृध्द क्यों दु:खी हुए? क्या हमारा एक दूसरे शिष्यों के साथ ऐसा गहरा रिश्ता है कि जब वो हमें छोड़कर जाते हैं तो हम दु:खी हो जाते हैं?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें ऐसा मन दे कि हम एक दूसरे के साथ सच्चाई से जुड़ें और संगती में महान् देनेवाले बनें।

21 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 21 पढ़ो

प्रेरितों 21 में यरूशलेम की अपनी यात्रा में पौलूस अपना तीसर धर्मप्रचार यात्रा समाप्त करते हैं।
ज़रा सोचिये, 15 वर्षों में पौलूस और दूसरों ने अनेक कलीसिया की स्थापना की, अनेक लोगों को चंगाई दी, और हजारों को यीशु के बारे में सिखाया। आज से आनेवाले अगले 15 वर्षों में हमारे द्वारा क्या करने की अनुमती हम परमेश्वर को देंगे?
क्या आप अभी से तैयारी कर रहे हैं? क्या आप सुसज्ज हो रहे हैं? आपकी उम्र क्या है? अगले 15 वर्षों में यीशु की सेवा करने की आपकी योजनाएं और आशाएं क्या हैं? क्या आपका कोई सपना है?
अपके जीवन को एक सपना देने के लिये क्या आप परमेश्वर को अनुमती दे रहे हो?
हमारे जान पर खेलकर भी यीशु के लिये जितना अधिक संभव हो सके उतना प्रभाव डालने के लिये क्या हम तैयार हैं? हमारा मन कैसा है? हम कितने नि:स्वार्थ हैं?
उनके लिये जो अभी जवान हैं, परमेश्वर को पूरी तरह से समर्पण करने की तैयारी करो और देखो कि परमेश्वर अपने लिये आपके जीवन में क्या करते हैं?
इन्तज़ार मत करो! देर मत करो! परमेश्वर के पास अभी आपके और मेरे लिये; चाहे हमारी उम्र कितनी भी हो, उत्तम उपहार हैं। आपके लिये उनके पास एक योजना है।
क्या हम उनतक भी सुसमाचार फैलाने के लिये तैयार हैं जो हमें जान से मार डालना चाहते हैं?(व.11)

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि हम पौलूस के जुनून की तरह यीशु को समर्पण करें। अपने जीवन से परमेश्वर की महिमा करने की योजनाओं के लिये प्रार्थना करो। प्रार्थना करो कि आपका हरएक निर्णय परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिये हो।

22 जनवरी 2018

प्रेरितों अध्याय 22 पढ़ो

वचन 1-21 में पौलूस अपने हृदय-परिवर्तन के बारे में ऐसे बांट रहा है जैसे ये कल की बात हो।(इसकी तुलना प्रेरितों 9:1-18 से करो)
उसकी गवाही एक कहानी की तरह बताई गई है।
अगली पीढ़ी को सुनाने के लिये हमारे पास एक कहानी है।
आज जब हम प्रचार करते हैं तो क्या हम अपनी कहानी बांटते हैं?
व.22 पौलूस को मार डालने की गुहार लगाते हुए भीड़ के सामने पौलूस का साहस अचंभित करने वाला है।
आपके हर दिन के आने जाने की जगह में वो दबाव भरा स्थान कहां है?
प्रचार करने से आपको क्या रोक रहा है?
आपको किस बात का डर है?
क्या हम यीशु में अपना भरोसा, आशा और विश्वास की रक्षा करने के लिये तैयार हैं?
यहां से लेकर रोम में पौलूस की मृत्यू तक उसने अनेक अधिकारियों के सामने अपने विश्वास की रक्षा की,अपने जीवन को बचाने के लिये नहीं परन्तु उन लोगों को मसीही बनाने के लिये।
इस प्रकार की परिस्थितियों को वह अवसर के रूप में देखते थे।

प्रार्थना: अपनी गवाही को याद करो और लिखो। प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमको ऐसी जगहों पर और ऐसे लोगों तक ले जाए जहां पर हम गर्व से अपनी गवाही और साहस से यीशु का प्रचार कर सकें चाहे हमें मौत का ही सामना क्यों न करना पड़े।

23 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 23 पढ़ो

अच्छे विवेक का अर्थ क्या है?
क्या हम यह दावा कर सकते हैं कि परमेश्वर के प्रति हमारे कर्तव्य को आज तक हमने अच्छे विवेक के साथ पूरा किया है?
आपके जीवन के वो कौनसे क्षेत्र हैं जहां पर अपने विवेक में आपको ग्लानि महसूस होती है?
हम सिध्द नहीं हैं। लेकिन यदि हम अपने पापों को मान लें तो यीशु हमें शुध्द और पवित्र रखेंगे (1यूहन्ना 1:5-10)। हम यीशु और दूसरे शिष्यों के साथ संगती कर पाएंगे।
वचन 11: आपके जीवन के नियत स्थान और मकसद के लिये आज यीशु आपसे कैसे बात करते हैं? आप यीशु के सपनों को पूरा कर रहे हैं या अपने?
वचन 12-35: पौलूस को मारने के हर षडयंत्र से यीशु ने ईश्वरीय रूप से उसकी रक्षा की।
परमेश्वर उसे उसकी रक्षा और रोम में प्रचार करने के लिये बचा रहे थे।
परमेश्वर ने आपको किस तरह से बचाया? लिखो।
परमेश्वर हमें यह जीवन क्यों दे रहे हैं? हर समय जब उन्होंने हमें बचाया और हमारी रक्षा की उन बातों का अर्थ हम क्या निकाल रहे हैं?
क्या आप यह भरोसा करते हो कि जिस तरह से परमेश्वर ने पौलूस को बचाया, वह सारे मानव अधिकारियों का उपयोग कर हमें भी बचाएगा क्योंकि वह सर्वशक्तिमान शासक है।

प्रार्थना: यदि ऐसी कोई बात है जो आपके विवेक को अशुध्द कर रही है तो उसे कबूल करो। परमेश्वर से प्रार्थना करो कि आपके नियत स्थान को वो आज आपपर प्रकट करें। जब-जब और जैसे-जैसे परमेश्वर ने आपको बचाया है उसके लिये परमेश्वर का धन्यवाद करो।

24 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 24 पढ़ो

वचन 14-18: पौलूस अपने जीवन का बचाव करता है। पवित्र वचनों पर उसका विश्वास, पुनरूत्थान में उसकी आशा, और धार्मिकता और निर्दोष विवेक के प्रति उसकी गवाही।
हमारे बचाव की तैयारी क्या है?
पवित्र शास्त्र पर विश्वास करने और मानने में हम कैसे हैं?
बढ़ती उम्र के साथ परमेश्वर की योजना में हमारी आशा कैसी होती है?
जैसे-जैसे आप उम्र में बढ़ते जाते हैं तो क्या पुनरूत्थान में आपका विश्वास और मजबूत होता जाता है?
क्या आपके पीठ पीछे आपके बारे में लोग बातें और चुगली करते हैं? क्या लोग आपको ठीक से समझ नहीं पाए हैं?
वहां पर पौलूस की मदद करने के लिये कलीसिया से एक भी व्यक्ति नहीं था।
क्या हमारी ऊपरी पहुँच इतनी शक्तिशाली है कि हमपर लगाए गए हर दोष और परीक्षा का हम डटकर सामना कर सकते हैं?

व.25- जब पौलूस ने धर्म और संयम तथा न्याय की चर्चा की तो फेलिक्स डर गया और ज्यादा कुछ सुनने से इन्कार किया।
क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्र हैं जीनमें आपको पश्चातप करना है, आप अपनी सुविधा के लिये बातों को टाल रहे हैं या फिर बहाने बना रहे हैं?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि परमेश्वर आपके जीवन के उन क्षेत्रों को आपके सामने स्पष्ट करे जहां अविश्वास है और पश्चाताप की आवश्यक्ता है। परमेश्वर और उनके लोगों से मदद और पश्चाताप के लिये बिनती करो।

25 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 25 और 26 पढ़ो

ऊपरी पहुँच:
फेस्तुस और राजा अग्रीप्पा के सामने पौलूस का बचाव और अधिक सबूत पैदा करता है कि परमेश्वर पौलूस की रक्षा कर रहे थे और उसे रोम जाने के लिये तैयार कर रहे थे।
यहूदियों ने उस पर गंभीर दोष लगाए(**व.7-9**)। हालांकि फेस्तुस यहुदियों की तरफदारी कर रहा था फिर भी वह पौलूस को रोम भेजने के अलावा और कुछ नहीं कर पाया।
जब आपके जीवन में सबकुछ उथल-पुथल हो रहा था; तो आपके विचार से तब परमेश्वर ने आपकी रक्षा कैसे की? उन्होंने आपको मदद कैसे पहुँचाई?

बाहरी पहुँच:
अग्रीप्पा के सामने पौलूस ने अपने हृदय-परिवर्तन की कहानी फिर से दोहराई (25:23-26:23) और यह तीसरी बार है जब पौलूस की कहानी प्ररितों में बांटी गई।
पौलूस ने अपनी गवाही अग्रीप्पा के साथ क्यों बांटी?**(व.25-29)**
हमें हमारी गवाही लोगों के साथ क्यों बांटना है?
व.25 - यीशु और उनके पुनरूत्थान की कहानी सच्ची और न्यायपूर्ण है।
हमें पुनरूत्थान की कहानी और हमारी आशा के कारणों को दूसरों के साथ नम्रता और आदर के साथ बांटना सीखना है। **(1पतरस 3:15)**
क्या पवित्र शास्त्र की कुछ बातें हैं जिन्हें आत्मविश्वास के साथ बांटने में आप असमर्थ हैं?
क्या पवित्र शास्त्र और सुसमाचार में कुछ ऐसी कहानियां हैं जिनपर आप विश्वास नहीं कर पा रहे हैं?
आज ही उन प्रश्नों को पूछो। उनके उत्तर अपने जानने वालों से पाओ। अपने विश्वास को बढ़ाओ जिसके कारण यीशु के पदचिन्हों पर चलने वाला आपका जीवन यीशु के लिये महिमा और उसके अनेक गवाहों के लिये उद्धार लाएगा।
जब तक हमारा विश्वास स्पष्ट नहीं और हम यह विश्वास नहीं करते कि यह "सच और न्यायपूर्ण" है हमारी बाहरी पहुँच सीमित रहेगी।

प्रार्थना: आपके विश्वास प्रणाली के क्षेत्रों के लिये जो अभी भी अपरिपक्व है प्रार्थना करो। बड़ी उम्र के भाई बहनों से मदद मांगो। परमेश्वर से अपनी और अपने विश्वास की परिपक्वता के लिये बिनती करो।

26 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 27 पढ़ो

भीतरी पहुँच:

वचन 9-11: पौलूस की चेतावनी के बावज़ूद भी जहाज रोम की ओर बढ़े जा रहा था।

क्या हमारी आदत है कि किसी भी बड़े काम को करने का बीड़ा उठाने से पहले बहुत सलाह लेते हैं (आत्मा से भरे लोगों से) या फिर हम दूसरे लोगों के लोकप्रीय नीर्णय अपनाते हैं?

आज आपके सलाहकार कौन हैं?

वचन 12-25:हमारी संगती में ऐसा कौन है जो हमारे जीवन में उठे तुफानों के बीच हमें प्रोत्साहन देता है?

जब आप तुफानों से घिरे हो और अपनी सारी आशाएं खो चुके हो तो, वो कौनसा व्यक्ति है जिसके पास आप मदद के लिये जाते हो? **(व.20)**

ऊपरी पहुँच:

जीवन की कठीनाईयों और तुफानों के बीच आप कैसे एक प्रोत्साहन देनेवाले बन सकते हो?

(वचन 23-25) पौलूस यहां पर इसका उपाय बताता है-तुफान के बीच वह अपने परमेश्वर और उनके स्वर्गदूत के साथ समय बिताने में व्यस्त था।

परमेश्वर ने फिर से पौलूस के साथ अपनी बातों को दोहराया।

जीवन के तुफानों से निपटने का आपका तरीका क्या है-आर्थिक मुसिबत, दुर्घटनाएं, मृत्यू, नुकसान, अस्वसथता,बीमारी, काम छूटना, अस्वीकारे जाना?

क्या आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को याद करते और उनका मनन करते हो?

मुसिबतों के समय क्या परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं फिर से आपके मन में आश्वासन बनकर ऊभरते हैं?

कितने लोग बचे? **व.37**

क्या कोई नष्ट हुआ? **व.44**

आपके अनुसार इस पूरे अध्याय में हरएक मोड़पर लोगों को बचाने के लिये परमेश्वर कैसे बीच में आए? परमेश्वर का प्रवक्ता कौन था?

आपके आस-पास के लोगों को बचाने के लिये आप परमेश्वर के प्रवक्ता कैसे बन सकते हो?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि जब संसार एक विनाश से दूसरे विनाश की ओर बढ़ रहा है, तब आपके परिवार के सदस्यों और आपके लोगों के लिये एक शान्त प्रवक्ता के रूप में परमेश्वर आपको चुन सकें। प्रार्थना करो कि जब आप अनेक लोगों को उद्धार की ओर ले जाते हो तो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में आपका विश्वास, आपको और अधिक से अधिक आश्वासन दे।

27 जनवरी 2018
प्रेरितों अध्याय 28 पढ़ो

भीतरी पहुँच:
वचन 1-6: पौलूस को हत्यारे से देवता कहकर बुलाने में माल्टा के लोगों का विचार बदलने में कितना समय लगा?
क्या हम लोगों का तुरन्त न्याय कर डालते हैं? जब हम लोगों से मिलते हैं तो क्या उनके लिये हम सबसे बुरी बात सोचते हैं?
व.7-10: मिनिस्ट्री में अतीथी सत्कार का क्या महत्व है?
महान प्रेरित पौलूस को भी किस बात से प्रोत्साहन मिला? **व.15**
यदि हम टूट चुके हैं और निराश हैं तो कौनसी बात हमें प्रोत्साहन देगी? **(इब्रा.3:12-13, 10:24-25)**

ऊपरी पहुँच:
सांप जहरीला होता है और इसलिये पौलूस को मर जाना चाहिये था। लेकिन वो नहीं मरा क्योंकि उसके द्वारा परमेश्वर का काम अभी पूरा नहीं हुआ था।
कितनी जल्दि आप हार मान लेते हैं? परमेश्वर ने आपके द्वारा जो आरंभ किया है क्या आपमें यह आत्मविश्वास है कि वह उसे पूरा करेगा?

बाहरी पहुँच:
अन्ततः रोम में आखरी बार पौलूस ने अपना बचाव किया जहां वह गृहकैद में थे और शहीद हुए।

वचन 23-31:
पौलूस के अन्तिम दिन कैसे बिते?
गृहकैद की जगह पर उन्होंने क्या किया?
आपके अनुसार परमेश्वर ने आपको इस शहर, इस समय और इन अवसरों के बीच क्यों रखा है? आप इसका लाभ कैसे उठा रहे हैं?

प्रार्थना: प्रार्थना करो कि, जिस मकसद के लिये परमेश्वर ने आपको बनाया है उस मकसद के लिये वो आपका उपयोग करें। होने दो कि प्ररितों की किताब में आप एक और अध्याय लिख सको क्योंकि उनके कलीसिया की कहानी यीशु के दोबारा लौटकर आने तक चलती रहेगी।